JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वाल्मीकि रामायण में हनुमान का चरित्र एवं कार्य क्षेत्र एक अध्ययन

Srinivasa Ramanuja[1], Dr. Sushma Rani[2]

[1]Research Scholar, OPJS University, Churu Rajasthan
[2]Research Supervisor, OPJS University, Churu Rajasthan

सारांश

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध वाल्मीकीय रामायण एवं रामकथाश्रित प्रमुख नाटकों में हनुमान एक समीक्षात्मक अध्ययन के अनुरूप आदिकवि द्वारा हनुमान संज्ञा की सार्थकता हनुमान जी द्वारा अद्भुत पराक्रम को व्यक्त करते हुए बाल्यावस्था में जहाँ सूर्य को फल समझकर निगलने का प्रयास करते हैं वहीं इन्द्र को राहु द्वारा सूचित करने पर ऐरावत को भी फल समझकर उस तरफ मुड़ते हैं जिस पर इन्द्र द्वारा वज्र से प्रहार करने पर हनु नामक हड्डी टूट जाने पर तथा पवनदेव द्वारा वायु रोकने पर इन्द्र आदि देवताओं द्वारा दिए वरदान के फलस्वरूप इनका मान बढ़ा जिससे इन्हें हनुमान कहते हैं। कतिपय अन्य नाटकों की श्रेणी में अधिकाधिक संख्या में ऐसे नाटक प्राप्त होते हैं जिसमें हनुमान का चरित्र वीरतापूर्ण प्रदर्शित होता है तो कुछ के हनुमान महानायक की भाँति संघर्ष करते हुए दीख पड़ते हैं। वहीं कुछ ऐसे नाटकों की भी श्रेणी है जिनमें श्री हनुमान का चरित्र संकेत मात्र से है तो कुछ नाटकों में नहीं भी प्राप्त होता है । मूलतरू श्रीरामकथा से हनुमान चरित्र को स्वीकारना एक आदर्श सत्य है । आगे चतुर्थ अध्याय वाल्मीकीय रामायण में हनुमान का चरित्र रामकथा के साथ हनुमान की प्रासंगिकता को बड़े ही मनोहर रूप में व्यक्त करता है।

मुख्यशब्द– वाल्मीकि रामायण, हनुमान का चरित्र, रामकथा, हनुमान की प्रासंगिकता

प्रस्तावना

साहित्य समाज का दर्पण होता है और संस्कृति की आत्मा साहित्य के अन्दर दिखलायी देती है। अत: संस्कृत साहित्य इस सिद्धांत को पूर्णरूप से अंगीकार करता है । संस्कृत काव्य जीवन के विषम परिस्थितियों के अन्दर आनन्दानुभव में सदा लगी रही।

अन्य साहित्य ग्रन्थों को छोड़ दिया जाय तो प्रथम कवि द्वारा रचित रामायण के अन्तर्गत विभिन्न विषयों का अवलोकन अध्ययनोपरांत प्रत्यक्ष होने लगता है । इसी विचारधारा के अनुरूप साहित्य जीवन संघर्ष के प्रति प्रेरित करती रहती है । इसी दार्शनिक सिद्धांत का अतुल भण्डार महर्षि वाल्मीकि के चरित्र में विद्यमान है।

महर्षि वाल्मीकि द्वारा कथावस्तु को आधार मान कर चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत इसका वर्णन हनुमान के चरित्र से प्रारम्भ किया जा रहा है।

हनुमान का चरित्र

वाल्मीकीय रामायण में हनुमान का चरित्र स्थल–स्थल पर देखने को मिलता है। किष्किन्धाकाण्ड से लकर युद्धकाण्ड और सुन्दर काण्ड एवं अन्य स्थानों पर भी हनुमान का उज्ज्वल चरित्र दिखाई देता है । जैसा कि वाल्मीकीय रामायण में उन्हीं के श्रीमुख से स्पष्ट है । यथा

युवाभ्यां स हि धर्मात्मा सुग्रीवः सख्यमिच्छति ।

तस्य मां सचिवं वित्तं वानरं पवनात्मजम् ।।

भिक्षुरूप प्रतिच्छन्नं सुग्रीव प्रिय कारणात् ।

ऋष्यमूकादिह प्राप्तं कामगं कामचारिणम् ।।

धर्मात्मा सुग्रीव आप दोनों से मित्रता करना चाहते हैं। मुझे आप लोग उन्हीं का मन्त्री समझें । मैं वायु देवता का वानरजातीय पुत्र हूँ। मैं जो चाहूँ रूप धारण कर सकता हूँ । इस समय सुग्रीव का प्रिय करने के लिए भिक्षु के रूप में अपने को छिपाकर मैं ऋष्यमूक पर्वत से यहाँ पर आया हूँ।

हनुमान जी की दूतात्मक कुशलता भी उनके उत्तम चरित्र को रेखांकित करती है । यथा

एवमुक्त्वा तु हनुमांस्तौ वीरौ रामलक्ष्मणौ ।

वाक्यज्ञो वाक्यकुशलः पुनर्नोवाच किंचन ।।

प्रस्तुतीकरण में श्री हनुमान वीरवर राम, लक्ष्मण से अपना परिचय देते हैं तथा एक सफल मित्र और दूत की भाँति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए मौन हो जाते हैं। वाल्मीकीय रामायण में उनकी इस कुशलता को श्रीराम भी स्वीकार करते हैं । यथा

न मुखे नेत्रयोश्चापि ललाटे च भ्रुवोस्तथा ।

अन्येष्वपि च सर्वेषु दोषः संविदितः क्वचित् ।।

श्री हनुमान के श्रीमुख से ऐसा सुनकर श्री रामचन्द्र जी का मुख प्रसन्नता से खिल उठता है । यह दृष्टान्त हनुमान की वाक् कला तथा बौद्धिक कला का जयघोष तो करता ही है तदनन्तर उन्हें एक नीतिज्ञ, धर्मज्ञ तथा एक दूरदर्शी व्यक्तित्व को अंगीकार करता है तथा श्री राम लक्ष्मण से इस संदर्भ में कहते हैं । यथा

अविस्तरमसंदिग्धमविलम्बितमव्यथम् ।

उरःस्थं कण्ठगं वाक्यं वर्तते मध्यमस्वरम् ।।

सुमित्रानन्दन ! ये महामनस्वी वानरराज सुग्रीव के सचिव हैं और उन्हीं के हित की इच्छा से मेरे पास आये हैं । हनुमान का यह वाल्मीय रामायण में शुभेच्छु व्यवहार उनके निर्मल चरित्र को इंगित करता है।

हनुमान संज्ञा की सार्थकता

वाल्मीकीय रामायण में ही स्पष्ट रूप से हनुमान संज्ञा की सार्थकता का बोध किष्किन्धाकाण्ड, तथा उत्तरकाण्ड में उत्पत्ति व वंश की परम्परा को बताते हुए एक विशेषण तथा घटना के साथ दिया गया है । यथा

मत्करोत्सृष्टवज्रेण हनुरस्य यथा हतः ।

नाम्ना वै कपिशार्दूलो भविता हनुमानिति ।।

श्री इन्द्र कहते हैं कि उनके हाथ से छूटे हुए वज्र के द्वारा इस बालक की हनु (ठुड्डी) टूट गयी थी, इसलिए इस कपिश्रेष्ठ का नाम श्हनुमानश होगा। हनुमान संज्ञा की सार्थकता हनु नामक हड्डी के टूटने के कारण तथा इनकी इन्द्र से प्राप्त युद्ध विशेषता के कारण स्पष्ट होता है जो कि एक विशिष्ट उपमा को प्रदर्शित करता है। श्री हनुमान वरुण के भी वर को प्राप्त करते हैं ।

वरुणश्च वरं प्रादान्नास्य मृत्युभविष्यति ।

वर्षायुतशतेनापि मत्पाशादुदकादपि ।।

वरुण हनुमान को दश लाख वर्षों की आयु हो जाने पर भी उनके पाश एवं जल से पवनपुत्र की मृत्यु न होने का वरदान देते हैं।

श्री हनुमान हनुमान संज्ञा की सार्थकता को विभिन्न कौशल एवं अपने पराक्रम को स्थल–स्थल पर अभिव्यक्त करते हैं तथा विभिन्न आख्यानों के माध्यम से पवनसुत की गौरवगाथा हर स्थान पर प्रमाणित होती हैं प्रकरण

चाहे वरुण के आशीर्वाद का हो या यम के वर का वह उनकी योग्यता के अनुरूप प्रोत्साहन को व्यक्त करता है । वाल्मीकीय रामायण में यम ने वर दिया । यथा

यमो दण्डावध्यत्वमरोगत्वं च दत्तवान् ।

वरं ददामि संतुष्ट अविषादं च संयुगे ।।

गदेयं मामिका नैनं संयुगेषु वधिष्यति ।

इत्येवं धनदः प्राह तदा ह्येकाक्षिपिङ्गलः ।।

श्रीहनुमान यम के दण्ड से अवध्य और निरोग रहेंगे। तदनन्तर पिंगलवर्ण की एक आँख वाले कुबेर ने कहाकृ मैं संतुष्ट होकर यह वर देता हूँ कि युद्ध में कभी इसे विषाद न होगा तथा मेरी यह गदा संग्राम में इसका वध न कर सकेगी । यहाँ हनुमान को तीन युग्म जिसमें छरू प्रकार के ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य छरू प्रकार के गुणों से युक्त रहने की बात कही गई है। बाल, पौगण्ड तथा कैशोर तीनों अवस्थाओं जो कि देवताओं की अवस्थाएँ हैं से युक्त होने की बात कही गयी है । हनुमान पर शिव की अनुकम्पा भी दिखाई देती है

मत्तो मदायुधानां च अवध्योऽयं भविष्यति ।

इत्येवं शङ्करेणापि दत्तोऽस्य परमो वरः ।।

भगवान शंकर ने उततम वर दिया कि हनुमान उनके और उनके आयुधों के द्वारा भी अवध्य होगा । पराक्रम और शौर्य की प्रतिमूर्ति श्रीहनुमान से सभी चमत्कृत होते हैं जिसमें शिल्पियों में श्रेष्ठ परम बुद्धिमान विश्वकर्मा ने बालसूर्य के समान अरुणकांति वाले शिशु को वर दिया । यथा

विश्वकर्मा च दृष्ट्वेयं बालसूर्योपमं शिशुम् ।

शिल्पिना प्रवरः प्रदाद् वरमस्य महामतिः ।।

श्रीराम के अनन्य सेवक भक्ताग्रगण्य हनुमान की कर्तव्यनिष्ठा गौरवगाथा का सर्वोवेन वर्णन, जगज्जननी जानकी की करुण रस परिप्लुता दयनीय दशा का चित्रण, तथा उसमें श्रीहनुमान की योग्यता का दर्शन समय–समय पर मिलता है। अद्वितीय दुष्कर कर्म के चिकीर्षु, सिंहसम पराक्रमशाली हनुमान ने सीतान्वेषणार्थ दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान किया । गगनगामी महावीर को उड़ते हुए देख पर्वतनिवासी जीवजन्तु गन्धर्वादि भयभीत हो उठे। विद्याधर अपनी रमणियों सहित अस्त–व्यस्त दशा में भाग खड़े हुए। ऐसे पराक्रम के उपरान्त भी बाल्यावस्था में विश्वकर्मा की कृपा का वर्णन भी स्थल–स्थल पर प्राप्त होता है।

मत्कृतानि च शस्त्राणि यानि दिव्यानि तानि च ।

तैरवध्यत्वमापन्नाश्चिरजीवी भविष्यति ।।

मेरे बनाए हुए जितने दिव्य अस्त्र–शस्त्र हैं, उनसे अवध्य होकर यह बालक चिरञ्जीवी होगा। मैनाक द्वारा हनुमान का स्वागत सत्कार देखकर इन्द्र ने मैनाक को अभयदान दिया जो हनुमान के स्वरूप को ही इंगित करता है।

दीर्घायुश्च महात्मा च ब्रह्मा तं प्राब्रवीद वचः ।

सर्वेषां ब्रह्मण्डानामवध्योऽयं भविष्यति ।।

अन्त में ब्रह्माजी ने उस बालक को (श्रीहनुमान) लक्ष्य करके कहा यह दीर्घायु, महात्मा तथा सब प्रकार के ब्रह्मदण्डों से अवध्य होगा । हनुमान का पराक्रम हनुमान संज्ञा की सार्थकता को प्रकट करता है। श्रीहनुमान की दूरदर्शिता का परिचय समुद्रोल्लंघन के बाद दिखता है जिसमें हनुमान लंका में सतर्कतापूव्रक प्रवेश किया तथा लंका के विशिष्ट वैभव का वर्णन करते हैं । ब्रह्मा का आशीर्वचन तथा प्रसन्नता एवं वायुदेव से वार्तालाप हनुमान जी के पराक्रमी व्यक्तित्व को इंगित करता है।

ततः सुराणां तु वरैर्दृष्ट्वा ब्रह्मोनमलङ्कृतम् ।

चतुर्मुखस्तुष्टमना वायुमाह जगद्गुरुः ।।

ब्रह्माजी वायुदेव से कहते हैं मारुत ! तुम्हारा पुत्र मारुति शत्रुओं के लिए भयंकर और मित्रों के लिए अभयदाता होगा । युद्ध में कोई भी इसे जीत न सकेगा। हनुमान का इस प्रकार का अभयदान उनके तेजस्वी व गरिमामयी स्वरूप को व्यक्त करता है। ब्रह्मा जी के वचन साक्षात इस महातेजस्वी व्यक्तित्व को परिभाषित एवं इंगित करता है

अमित्राणां भयकरो मित्राणामभयंकरः ।

अजेयो भविता पुत्रस्तव मारुत मारुतिः ।।

इनके पराक्रम एवं व्यक्तित्व को देखकर राक्षसियाँ लंका की उन्हें वेशधारी राक्षस ही बताती हैं । राक्षसियां इसकी सूचना तुरन्त रावण को देती हैं । क्रोधित होकर रावण ने क्रमश; किंकर, प्रहस्त–पुत्र, जम्बुमाली, अमात्य–पुत्र, दुर्धर, विरूपाक्ष, यूपाक्ष, प्रधस, भासकर्ण तथा अक्षयकुमार को भेजा और सभी का हनुमान ने वध किया। हनुमान इस प्रकार अपने गौरवमयी स्वरूप में अवतरित हुए कि बालपन से ही इसकी झलक स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है । यथा

एवंविधानि कर्माणि प्रावर्तत महाबलः ।

सर्वेषां ब्रह्मदण्डानामवध्यः शम्भुना कृतः ।।

जानन्त ऋषयः सर्वे सहन्ते तस्य शक्तितः ।

कल्याणकारी भगवान ब्रह्मा ने इन्हें सब प्रकार के ब्रह्मदण्डों से अवध्य कर दिया हैकृयह बात सभी ऋषि जानते थे, अतरू इनकी शक्ति से विवश हो वे इनके सारे अपराध चुपचाप सह लेते थे। यद्यपि केसरी तथा वायुदेवता भी इन अञ्जनीकुमार को बारम्बार मना किया तो भी ये वानरवीर मर्यादा का उल्लङ्घन कर ही देते थे । यथा

तथा केसरिणा त्वेष वायुना सोऽञ्जनीसुतः ।

प्रतिषिद्धोऽपि मर्यादां लङ्घयत्येव वानरः ।।

महर्षि वाल्मीकि सीताहरण के पश्चात् श्रीराम का विलाप, रावण द्वारा गृध्रराज जटायु का वध श्रीराम लक्ष्मण की कबन्ध से भेंट, उनके द्वारा पम्पा सरोवर का अवलोकन, श्रीराम से शबरी का मिलना और उसके दिए हुए फलमूल को ग्रहण करना, श्रीराम का सीता के लिए प्रलाप, पम्पा सरोवर के निकट ही हनुमान जी से भेंट श्रीराम और लक्ष्मण का हनुमान के साथ ऋष्यमूक पर्वत पर आना, सुग्रीव से उनकी भेंट कराना उन्हें विश्वास दिला व उनके साथ मित्रता स्थापित करना तथा बाल उद्दण्डता को व्यक्त करना

ततो महर्षयः क्रुद्धा भृग्वङ्गिरसवंशजाः ।

शेपुरेनं रघुश्रेष्ठ नातिक्रुद्धातिमन्यवः ।।

जिसके कारण भृगु और अङ्गिरा वंश में उत्पन्न हुए महर्षि कुपित हो उठे थे तथा इन्हें शाप देते हुए कहाकृ वानरवीर ! तुम जिस बल का आश्रय लेकर हमें सता रहे हो, उसे हमारे शाप से मोहित होकर दीर्घकाल तक भूले रहेगे। तुम्हें अपने बल का पता ही नहीं चलेगा । यथा

बाधसे यत् समाश्रित्य बलमस्मान प्लवङ्गम् ।

तद दीर्घकालं वेत्तासि नास्माकं शापमोहितः ।

यदा ते स्मार्यते कीर्तिस्तदा ते वर्धते बलम् ।।

जब तुम्हें कोई अपनी कीर्ति का स्मरण दिला देगा, तभी तुम्हारा बल बढ़ेगा। यह प्रकरण श्रीहनुमान के ओजस्वी व्यक्तित्व तथा उनके विकट पौरुष के रूप में प्रसङ्गानुकूल वर्णित होता है । श्रीवाल्मीकीय रामायण

में महर्षि वाल्मीकि एक कुशाग्र दूत, धैर्यवान व्यक्तित्व, एक समर्पित योद्धा एवं अद्भुत चरित्र के रूप में देखते हैं । बाल्यावस्था में हनु हड्डी टूटने से लेकर इनके नटखट बालपन एवं मर्यादापरक शिक्षा का एक सुयोग्य विद्यार्थी भी मानते हैं । यथा

ततस्तु ह्ततेजौजा महर्षिवचनौजसा ।

एषोऽऽ श्रमाणि तान्येव मृदुभावं गतोऽचरत् ।।

महर्षियों के शापित वचन के प्रभाव से इनका तेज और ओज घट गया फिर ये उन्हीं आश्रमों में मृदुल प्रकृति के होकर विचरने लगे। इस प्रकार के शापबाधित बल को लेकर श्रीहनुमान जहाँ एक ओर बलविस्मृति के कारण सामान्य हो जाते हैं वहीं आगे चलकर जाम्बवान द्वारा उनके बल याद दिलाने पर वे अलौकिक कृत्य करते देखे जाते हैं। यथा

अथर्भरजसो नाम वालिसुग्रीवयो पिता ।

सर्ववानरराजासीत् तेजसा इव भास्करः ।।

ऋक्षरजा के पुत्र बाली और सुग्रीव के साथ भी हनुमान का उत्तम चरित्र निष्पकट ही था । यद्यपि ऋक्षरजा वानर समूह के राजा थे तथापि उनके अनुशासन में हनुमान तथा आगे सुग्रीव के साथ हनुमान की मित्रता सदैव उनके विश्वासपूर्ण पराक्रमी चरित्र की ओर इंगित करती है । बाली और सुग्रीव के संग्राम में प्रभु श्रीराम की भूमिका एवं उनके प्रति हनुमान का समर्पण उनके स्वामिभक्ति व ओजस्वी चरित्र का परिचायक है। हनुमान की शिक्षा–दीक्षा के विषय में भी महर्षि वाल्मीकि ने स्थल–स्थल पर उसका निरूपण किया है । यथा

असौ पुनर्व्याकरणं ग्रहीष्यन्

सूर्योन्मुखः प्रष्टुमनाः कपीन्द्रः ।

उद्यद्दिगरेरस्तगिरिं जगाम

ग्रन्थं महद्धारयनप्रमेयः ।।

ये असीम शक्तिशाली कपिश्रेष्ठ हनुमान व्याकरण का अध्ययन करने के लिए शङ्काएँ पूछने की इच्छा से सूर्य की ओर मुँह रखकर महान ग्रन्थ धारण किए । उनके आगे–आगे उदयाचल से अस्ताचल तक जाते थे। इन्होंने सूत्र, वृत्ति, वार्तिक, महाभाष्य और संग्रह इन सबका अच्छी तरह अध्ययन किया है । अन्यान्य शास्त्रों के ज्ञान तथा छन्दशास्त्र के अध्ययन में भी इनकी समानता करने वाला कोई विद्वान नहीं है।

हनुमत कार्य क्षेत्र

हनुमान का कार्य क्षेत्र किष्किन्धाकाण्ड से ही प्रकट हो जाता है जिसमें बाल हनुमान का वर्णन एवं हनुमान द्वारा सुग्रीव व श्रीराम की मित्रता स्थापित करना तथा सुन्दरकाण्ड में सीता की खोज तथा लंकादहन से लेकर युद्धकाण्ड रावण वध तक पुनः श्रीराम के राज्याभिषेक से लेकर उत्तरकाण्ड तक के वर्णन में गौरवशाली स्वरूप में प्राप्तज होता है जो कि श्रीहनुमान की कार्य विषयक गम्भीरता को प्रकट करता है । हनुमान के समुद्र लींघन की घटना बड़ी ही गौरवशाली तथा अद्भुत् है जिस समय हनुमान श्रीरामचन्द्र जी का कार्य सिद्ध करने के लिए जा रहे थे उस समय वेग से जाते हुए वानरराज हनुमान को सूर्यदेव ने ताप नहीं पहुँचाया और वायुदेव ने भी उनकी सेवा की । आकाशमार्ग से यात्रा करते हुए वानरवीर हनुमान की ऋषि–मुनि स्तुति करने लगे तथादेवता गन्धर्व उनकी प्रशंसा के गीत गाने लगे। उन कपिश्रेष्ठ को बिना थकावट के सहसा आगे बढ़ते देख नाग, यक्ष और नाना प्रकार के राक्षस उनकी स्तुति करने लगे । जिस समय कपि केसरी हनुमान जी इक्ष्वाकुकुल का सम्मान करने की इच्छा से समुद्र ने विचार किया यदि मैं वानरराज हनुमान की सहायता नहीं करूंगा तो बोलने की इच्छा वाले सभी लोगों की दृष्टि में मैं सर्वथा निन्दनीय हो जाऊँगा ।

हनमान जब लंका के द्वार पर पहुँचते हैं तो लङ्का से बोले– कक्रूर स्वभाव वाली नारी तू मुझसे जो पूछ रही है उसका उत्तर मैं बता दूँगा। पहले भयंकर नेत्र वाली इच्छानुरूप रूप धारण करने वाली लंका का परिचय श्रीहनुमान से प्राप्त किया । हनुमान जीने लंका को द्वार पर पराजित कर नगर के निरीक्षण में पाया कि राक्षसों के घरों में मन्त्र जाप तथा कितने ही निशाचरों को वहाँ स्वाध्याय में तत्पर पाया । कुछ राक्षसों को हनुमान जी ने कुरूप कुछ को वेशधारी कुछ को सुन्दर तथा कुछ तेजस्वी तथा ध्वजा पताका से युक्त देखा जो अस्त्र–शस्त्रधारी थे। बुद्धिमान वानर हनुमान् ने वहाँ बहुत से घर देखे ।किन्हीं में ऐश्वर्य मद से मत्त निशाचर निवास करते थे, किन्हीं में मदिरापान करने वाले मतवाले राक्षस । कितने ही घर, रथ घोड़े आदि वाहनों एवं भद्रासनों से सम्पन्न थे तथा कितने ही वीर लक्ष्मी से व्याप्त दिखाई देते थे। वे गृह एक दूसरे से मिले हुए थे। तदनन्तर हनुमान जी ने शयनगृहों में पृथक् सोयी हुई एक रूपवती स्त्री को हनुमान जी ने देखा । वहा गोरे रंग की थी। वह रावण की प्रियतमा और उसके अन्तरूपुर की स्वामिनी थी । उसका नाम मन्दोदरी था । वह अपने मनोहर रूप से सुशोभित हो रही थी। वही वहाँ सो रही थी। हनुमान जी ने उसे देखा । रूप और यौवन की सम्पत्ति से युक्त और वस्त्राभूषणों से विभूषित मन्दोदरी को देखकर महाबाहु पवनकुमार ने अनुमान किया कि ये ही सीताजी हैं। फिर तो ये वानरयूथपति हनुमान महान हर्ष से युक्तहो आनन्दमग्न हो गये । तदनन्तर हनुमान जी विचार करते हैं कि भामिनी सीता श्रीरामचन्द्र जी से बिछुड़ गयी हैं । इस दशा में वे न तो सो सकती हैं, न भोजन कर सकती हैं, फिर मदिरापान का सेवन तो किसी भाँति नहीं कर सकती हैं । अतरू अवश्य ही यह सीता नहीं कोई दूसरी स्त्री है । ऐसा निश्चय करके सीताजी के

दर्शन के लिए उत्सुक हो विचरने लगे। सुन्दर चौत्य प्रासाद मन्दिर देखने के अनन्तर श्रीहनुमान की दृष्टि एक सुन्दर स्त्री पर पड़ी, जो मलिन वस्त्र धारण किये हुए थी तथा राक्षसियों से घिरी हुई बैठी थी । वह उपवास करने के कारण अत्यन्त दुर्बल और दीन दिखाई देती थी तथा बारम्बार सिसक रही थी । शुक्लपक्ष के आरम्भ में चन्द्रमा की कला जैसी निर्मल और कृश दिखाई देती है वैसे ही वह भी दृष्टिगोचर होती थी । सीता जी का भली प्रकार निश्चय कर हनुमान ने श्रीराम नाम से अंकित मुद्रिका सीता को दिया जिससे वे श्री हनुमान पर विश्वस्त होकर प्रसन्न हो उठीं । लंका के प्रमदवन में राक्षसों का संहार करने के पश्चात् इन्द्रजित् और हनुमान का युद्ध और दिव्यास्त्र का सम्मान करते हुए श्रीहनुमान का रावण की सभा में उपस्थित हुए । रावण ने प्रहस्त के द्वारा हनुमान जी से लंका में आने का कारण पुछवाया और श्रीहनुमान ने अपने को स्वयं श्री राम का दूत स्वीकार किया। तत्पश्चात् श्रीहनुमान श्रीराम के प्रभाव का वर्णन करते हुए रावण को समझाते हैं। रावण ने इसे श्रीहनुमान का अशिष्ट आचरण समझकर हनुमान के वध की आज्ञा दूत को दी। विभीषण द्वारा दूत वध को अनुचित बताये जाने पर रावण ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया और दण्ड स्वरूप हनुमान की पूँछ में आग लगाकर उन्हें नगर घुमाने की आज्ञा दी । इस प्रकार का आचरण करने पर हनुमान ने लंकापुरी का दहन कर दिया जिससे कि राक्षसों का तथा उनकी स्त्रियों का विलाप होने लगा ।६ सीता ऐसी दशा देख कर चिंतित होती हैं जिसका निराकरण होता है । तदनन्तर हनुमान जी सीता जी से मिलकर उनका समाचार जानने के उपरान्त वापस लौटने के लिए पुनरू समुद्रलंघन करते हैं । हनुमान जी समुद्र को लांघकर जाम्बवान और अंगद आदि सुहदयों से मिलकर जाम्बवान के पूछने पर अपनी लंका यात्रा का वृत्तान्त सुनाते हैं । आगे युद्धकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड में भी श्रीहनुमान का कार्यक्षेत्र अपने चरम पर है जहाँ युद्धकाण्ड में इनके पराक्रम तथा वीरता का वर्णन होता है वहीं उत्तरकाण्ड में इनकी विनयशीलता तथा कर्तव्यनिष्ठा का वर्णन मिलता है। श्री हनुमान को किसी भी कार्यक्षेत्र में लघुता की श्रेणी में रखना हनुमान संज्ञा के विरुद्ध प्रतीत होता है अपने इसी कार्य व्यवहार पर ये जननायक की छवि धारण करते हैं। श्री हनुमान के कार्यक्षेत्र तथा उसमें उनकी कुशलता को स्वयं अगस्त्य जी से स्वीकार करते हैं। श्रीरामचन्द्र जी अगस्त्य ऋषि से कहते हैं

शौर्य दाक्ष्यं बलं धैर्य प्राज्ञता नयसाधनम् ।

विक्रमश्च प्रभावश्च हनूमति कृतालयाः ।।

शूरता, दक्षता, बल, धैर्य, बुद्धिमत्ता, नीति, पराक्रम और प्रभाव इन सभी सद्गुणों ने हनुमान जी के भीतर घर कर रखा है। फिर लंकापुरी के आधिदैविक रूप को परास्त कर रावण के अन्तरूपुर में गये, सीताजी से मिले, उनसे बात–चीत की व धैर्य बंधाया। वहां अशोक वन में इन्होने अकेले रावण के अक्षयकुमार सेनापति व

मन्त्रिकुमार किंकरों को मार गिराया । फिर ये मेघनाद के नागपाश से बँधे और स्वयं ही मुक्त हो गये तथा रावण से वार्तालाप किया एवं प्रलयसदृश अग्नि से लंकापुरी को जलाकर भस्म कर दिया।

एतस्य बाहुवीर्येण लङ्का सीता च लक्ष्मणः ।

प्राप्ता मया जयश्चौव राज्यं मित्राणि बान्धवा ।।

मुनीश्वर ! मैंने तो इन्हीं के बाहुबल से विभीषण के लिए लंका, शत्रुओं पर विजय, अयोध्या का राज्य तथा सीता, लक्ष्मण, मित्र और बन्धुजनों को प्राप्त किया है । अतरू ये अपने कार्यक्षेत्र को विस्तृत करते हैं।

वैदिक साहित्य में रामायण के पात्र

रामकथा के कुछ पात्रों का नाम वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है किन्तु इनका रामकथा के पात्रों से कोई सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता है। प्रचलित रामकथा इक्ष्वाकुवंश से सम्बन्धित है।

ऋग्वेदश और अथर्ववेद में भी इक्ष्वाक् शब्द प्राप्त होता है। ऋग्वेद में ही दशरथ शब्द भी प्रयोग हुआ है । ऋग्वेद ऐतरेयब्राह्मणश शतपथ ब्राह्मणप तैत्तिरीयारण्यक और जैमिनीयोपनिषद ब्राह्मण इत्यादि में राम का नाम उल्लिखित है। जनक के वैदेह देवताओं से मिलने का वर्णन कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीयब्राह्मण में प्राप्त होता है । जनक का नाम शतपथ ब्राह्मण में अनेक स्थल पर प्राप्त होता है । जनक वैदेह का उल्लेख जैमिनीयब्राह्मण और वृहदारण्यक उपनिषदश में भी है । सीता का तो वैदिक साहित्य में अत्यधिक उल्लेख प्राप्त होता है । अतएव सीता सम्बन्धी सामग्री के अत्यधिक महत्वपूर्ण होने के कारण ही फा० कामिल बुल्के ने इस विषय के पर्याप्त विवेचन किया है।

इस प्रकार वैदिक साहित्य में उल्लिखित इन पात्रों का रामकथा के पात्रों से कोई सम्बन्ध दृष्टिगत नहीं होता क्योंकि रामकथा को कहीं भी दशरथ पुत्र के रूप में वर्णित नहीं किया गया है और न ही सीता को जनक की पुत्री के रूप में । राम के अतिरिक्त हनुमान आदि अन्य पात्रों का भी अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है। अत एव वैदिक साहित्य को रामकथा का स्रोत मानना सर्वथा अनुचित है।

हनुमान का स्वरूप

श्रीराम का प्रत्यासित कार्य कर हनुमान के आने पर राम ने भूरि–भूरि प्रशंसा कर कृतज्ञतार्पण किया। तदनन्तर सीता प्राप्ति के लिए व्यग्र हो उठे । इस लक्ष्य की पूर्ति में महान बाधक समुद्रोल्लंघन का विचार करते ही निरुपाय से होकर हतोत्साहित हो उठे । सुग्रीव द्वारा ढाढस बनाए जाने पर राम को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ और वे हनुमान से लंका का गुप्त भेद पूछने लगे। अपने विपक्षी की सेना, दुर्ग, नगर सम्बन्धी तथा

अन्य आवश्यक विवरणों का ज्ञान होते ही राम ने विजय मुहूर्त में अपनी समस्त सेना के साथ प्रस्थान कर दिया ।

प्रतिपक्षी रावण हनुमान द्वारा सीतान्वेषण प्राप्तिश तथा लंका विध्वंस की घटनाओं का स्मरण कर सशंकित होकर मन्त्रियों के साथ मन्त्रणा करने लगा। विभीषण ने अन्य मन्त्रणाओं का खण्डन कर राम के साथ, निरर्थक वैर न करके सीता को लौटा देने का परामर्श दिया । रावण ने प्रथमतरू मौन रूप से उसका

परामर्श सुनकर सभा विसर्जित कर दी परन्तु पुनरू वही मन्त्रणा विभीषण से सुनकर मेघनाद, प्रहस्त आदि ने विभीषण का विरोध कर अपने शौर्य कथन द्वारा रावण को प्रोत्साहित किया । रावण ने भी अन्ततरू विभीषण को कटूक्तियों द्वारा तिरस्कृत कर उसकी मन्त्रणा की नितान्त अवहेलना की ।१ रावण को सचेत कर दिव्याभूषित विभीषण चार राक्षसों सहित गगन मार्ग से राम के समीप आ गए । सम्यक् परीक्षा के अनन्तर राम ने उनसे मैत्री कर दृढ़तम सम्बन्ध स्थापित कर दिया। विभीषण से रावण सैन्य बल–दल का व्यापक विवरण ज्ञात कर राजनीतिज्ञ राम ने विभीषण का तुरन्त राज्याभिषेक कर दिया। विभीषण की मन्त्रणानुसार राम समुद्र की शरण में गए और सागर तट पर कुशासीन हो गए । पूर्वाभिमुखराम तीन दिन तक समुद्र तट पर स्थित रहे परन्तु कोई आशाजनक परिणाम न देख रुद्ररूप हो गए। इस रौद्र रूप से आतंकित एवं क्षुब्ध सागर ने स्वयं सूर्य सम प्रकट होकर राम को अपने उल्लंघन का मार्ग निर्दिष्ट किया । नल के निर्माण कौशल एवं सैन्य सहयोग से सेतुबन्धन का कार्य सम्पन्न हो गया तथा समस्त सेना समुद्र के दक्षिणी तट पर पहुँच गयी। इस दुष्कर एवं अद्भुत कार्य को देख देवगण ने भी राम का पवित्र जलों से अभिषेक कर आशीर्वचन दिया । अनुकूल समय देख राम ने गरजते हुए वानरों सहित लंका की ओर प्रयाण किया।

इसके बाद दोनों पक्षों की ओर से घनघोर युद्ध में असंख्य बली राक्षसों का संहार हुआ । महावीर हनुमान ने धूम्राक्ष एवं अकम्पन का वध किया तथा

पराक्रमी अंगद ने सेनाध्यक्ष वज्रदंष्ट्रा का, नील ने प्रधान सेनापति प्रहस्त का वध किया। वीर सेनापतियों की मृत्यु से प्रताड़ित रावण युद्ध प्रांगण में बल वेग से उपस्थित हुआ और लक्ष्मण पर ब्रह्मशक्ति से प्रहार किया । लक्ष्मण को आहत देख राम रावण से युद्ध करने लगे ।२ रावण बाणाहत होकर पराजित होकर लंका की ओर चला गया। राम को अमोघ बाणों के स्मरण मात्र से प्रकम्पित रावण ब्रह्मा के वाक्य एवं वेदवती शाप का स्मरण करने लगा। तत्पश्चात् दुर्धर्ष राम द्वारा कुम्भकर्ण वध होने पर रावण शोक सन्तप्त होने के कारण मूर्च्छित हो गया। अपने पिता को आश्वासन देकर परम मायावी रण निपुण एवं दुर्मद व रावण के सभी पुत्र युद्ध क्षेत्र को चल दिये । देव विजयी नरान्तक का अंगद ने देवान्तक एवं त्रिशिरा का परमवीर हनुमान ने तथा त्रिशिरा के पितृव्य महोदय का नील ने, रावण के कनिष्ठ भ्राता महापार्श्व का वानरश्रेष्ठ ऋषभ ने वध किया । कुम्भकरण सम भयंकर कर्मा रावण पुत्र अतिकाय को लक्ष्मण ने बाण प्रयोग से वध कर डाला ।

अपने परम बलवान भाइयों एवं पुत्रों के निधन से महाबलाढ्य रावण भी विचलित हो उठा । तब इन्द्र विजयी मेघनाद ने युद्ध की ओर प्रयाण किया और भयंकर युद्ध में लक्ष्मण को ब्रह्मास्त्र से मूर्च्छित कर दिया । तीव्रातितीव्रगामी हनुमान जामवन्त की आज्ञानुसार औषधियुक्त हिमवान गिरि को लाकर सभी को संज्ञायुक्त कर दिया।

सुग्रीव से आज्ञा पाकर सभी वानरों ने लंका में अग्निदाह कर दिया । लंका दहन के पश्चात् पुनरू वानरों एवं राक्षसों का भीषण युद्ध प्रारम्भ हो गया। सुग्रीव द्वारा कुम्भ तथा हनुमान द्वारा निकुम्भ की मृत्यु हो गयी । मकराक्ष से राम का घोर युद्ध हुआ और उसकी परमगति हुई । इन्द्रजित द्वारा कल्पित सीता का अवसान दिखाया गया । परन्तु विभीषण द्वारा शोक सन्तप्त राम आश्वस्त हुए । निकुम्भ नामक देवालय में मेघनाद यज्ञ करने लगा। विभीषण द्वारा उस यज्ञ में विघ्न डाला गया। पहले तो हनुमान इन्द्रजित का शस्त्र युद्ध हुआ तथा विभीषण से वाग्युद्ध । लक्ष्मण ने उसका वध किया । उसकी मृत्यु पर रावण ने अत्यधिक करुण क्रन्दन किया । अन्ततः प्रतिनायक का समरांगण में घनघोर युद्ध होने लगा। रावण के बाण से लक्ष्मण मूर्च्छित हो गए । सुषेण ने उन्हें पुनः स्वास्थ्यलाभ कराया । युद्धभूमि में राक्षसराज रावण भी मूर्छित हो गया। अगस्त्य ऋषि द्वारा 'आदित्य हृदयश का उपदेश सुनकर एवं इन्द्र रथ की प्राप्ति कर राम ने घोर युद्ध के पश्चात् उसकी लीला समाप्त कर दी । इस प्रकार युद्ध में स्थल स्थल पर हनुमान का आदर्श स्वरूप प्राप्त होता है।

निष्कर्ष

समीक्ष्य ग्रंथों में हनुमान की चारित्रिक विशेषताएँ हनुमान की दूरदर्शिता एवं पराक्रम को व्यक्त करती हैं जिनका प्रभाव उन रावण द्वारा भेजे गये चरों से राम व हनुमान आदि को लंका के समीपस्थ पर्वत पर आया हुआ सुनकर उद्विग्न रावण ने मायावी मन्त्रणाओं को क्रियाशील रूप देने का निश्चय किया। विद्युज्जिह्व नामक राक्षस से राम का मायामय शिर बनवाकर विरहपीड़िता सीता को राम के निधन का दुःखद संवाद सुनाकर अपने वश में करना चाहा । करुण क्रन्दर करती हुई सीता का सरमा नामक राक्षसी ने आश्वासन दिया और सत्य वस्तुस्थिति से अवगत कराया । इसी मध्य राम व हनुमान युद्ध के लिए उद्यत हुए । रणभेरियों की नाद सुनकर रावण माता एवं पितामह माल्यवन्त ने रावण को युद्ध से पराङ्मुख होकर राम से सन्धि करने की मन्त्रणा दी, परन्तु रावण ने उसकी भी पूर्णतः अवहेलना ही की।

दूसरी ओर हनुमान और राम जैसे राजनीतिज्ञ विभीषण द्वारा लंका तथा विभिन्न सैन्य दलों का परिचय प्राप्त किया तथा पर्वत पर से पुनरू बार,बार हनुमान ने तथा राम ने लंका के वैभव का निरीक्षण किया। हनुमान व सुग्रीव ने राजनीतिज्ञ की भाँति आकस्मिक एकाकी आक्रमण कर दिया और रावण से सुग्रीव एकाकी द्वंद्व युद्ध करते लौटे सकुशल जो उनके सखा व श्री हनुमान की उन्नत सोच का प्रतिफल था।

जाम्बवान भी श्रीहनुमान को इंगित करते हुए श्रीराम से कहते हैं अंगद से लक्षित करते हुए वीर तुम्हारे सीता शोध के कार्य में किंचित् कोई भी त्रुटि नहीं आने पाएगी । अब मैं ऐसे वीर को प्रेरित कर रहा हूँ, जो इस कार्य को सिद्ध कर सकेगा। ऐसा कहकर वानरों और भालुओं के वीर यूथपति जाम्बवान ने वानरसेना के श्रेष्ठ वीर हनुमान जी को ही प्रेरित किया, जो एकान्त में जाकर मौज से बैठे हुए थे। उन्हें किसी बात की चिन्ता नहीं थी और वे दूर तक छलांग मारने वालों में सबसे श्रेष्ठ थे। अतरू श्री हनुमान जहाँ एक ओर लोकमंगल के सारे कार्यों को करते देखे जाते हैं वहीं दुष्टविनाशक की छवि धारण करते हैं जहाँ एक ओर पराक्रम से सीता का पता लगाते हैं वहीं मानवतावादी संवेदनशील व्यक्तित्व का परिचय भी देते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1] वाल्मीकीय रामायण

[2] उपलब्ध पुराण साहित्य

[3] संस्कृत साहित्य का इतिहास – आचार्य बलदेव उपाध्याय

[4] संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – वाचस्पति गैरोला

[5] संस्कृत साहित्य का इतिहास– कपिलदेव द्विवेदी

[6] महाभारत – श्रीकृष्णद्वैपायन व्यास

[7] रामचरितमानस – गोस्वामी तुलसीदास

[8] भगवतीभाष्य वाल्मीकीयरामायण – जगदीश्वरानन्द

[9] जातक साहित्य – दशरथ जातक, अनामक जातक और दशरथ कथानक

[10] हेमचन्द्र कृत – जैन रामायण

[11] कालिदास कृत रघुवंश महाकाव्य

[12] प्रमुख रामकथाश्रित नाटक – भास कृत – प्रतिमा नाटक एवं अभिषेक नाटक

[13] प्रमुख रामकथाश्रित नाटक – भवभूति कृत – महावीर चरित

[14] प्रमुख रामकथाश्रित नाटक – अनंग हर्ष मयुराज कृत – उदात्त राघव

[15] प्रमुख रामकथाश्रित नाटक – राजशेखर कृत – बालरामायण

[16] प्रमुख रामकथाश्रित नाटक – दामोदर मिश्र कृत – महानाटक